

2948
R. H. H. H. H.

महा

॥ १ ॥

गंगान्वजमहाकाशसाध
त्यानिभ्रमयामास ॥ हं
कमकत किंन ॥ खर्वस
महाह ॥ कर्तिकया
मल्लभानिभ्रमयामास

महाकाश ॥ अथ
नैरुक्रमकायवाग्नि
कानमल्लनिष्पन्नदिशु
यमगुलस्थिरुसूवर्ध
लउदपिंगलकर्णकि
लिकर्ण ॥ हाशहनमरु

॥ काल

॥ १ ॥

पलेडंष्टान्नासुरयानकं ॥ महान्नासुवर्क ॥ धिनंमूर्वाह ॥ भाचा
र्यय ॥ दयी पिंठिमानल्लुयापिय ॥ अनकमल्लविर्धसिमहा
कालमन्नायम ॥ चूदय ॥ मन्नानिपिवदूधिनभमया ॥ अथ
वाहिनिनिर्विष्टो ॥ मित्तामयं कुकर्णय ॥ मन्नाजं वृत्तिकाम
यं पूजाधूपविलधनं ॥ यंत्रमान्नामन्नेव महाकाशायसुखदलिं
॥ अथ ॥ ॐ महाकाशाय नमः ॥ नाना यहा निब्रवा नय मूर्ति नमः ॥ नय

महा

॥३॥

सुखमवाचय्ये श्रीमहाकालाह्वयपञ्चकम्बुहिः॥ कालीकल
लीवलालीकं कालीमहाकालीयंचयगिनीहिः॥ महाविक्रीडिता नृपि
गहिः कर्दिकपालक्षानि श्रीहिर्वायुनगनगबामासं कर्दयनं नृधि
नं विवक्तं च दयं नं नाहि पूत्याय नं तिलप्रमालकनर्तकाधाल
कमित॥ पुनर्पूर्वाक्तविधाननभूत्पमाहावनान्नं विचिंश्वरप्र
सृष्टं कर्दुका नं कल्पयनिभं पतिनिष्यन्नं श्रीमहाकालं कर्दिक

॥ काल

॥ ३ ॥

मकुत्तमिति॥ मथेवपूर्वाक्तविधाननभूत्पमाहावनान्नं॥ विश्वय
मस्यार्ककर्दुका नं कल्पयनिनिष्यन्नं श्रीमहाकालहृदयनं कर्दिक
रुजमकमूर्वकर्दुका नं कर्दिकनयनं महाकालं कर्दिकपालक्षानि
दक्षिणामहाकाशं मधुका लालं कर्दुका नं विंगलकम् पतिन्यंचक
पालभनं॥ इंद्री श्रीमहाकाशं कर्दुका नं मधुका लालं कर्दुका नं
अनर्धुधिममममालानं मरिचिनिष्यन्नं मकुत्तमावर्द्धयन्॥ महायंम

महा

[illegible]

काय

[illegible]

महा

३

महाशक्तवर्कनृधिनं मूखात् ॥ आचार्ययः सदा दया सदा दडी कप
नन्न रुयापि पिबन्न रुयापि य ॥ जनकसत्त्वविधिं सिमहाखाय म
हाशक्त ॥ नृन्मंगमात्मानि पिय इधिन न नया ॥ अथवासि
नसिनिविष्टा होतिलमाठं दुक र्कय ॥ मां सक्तवृत्तिकामष्टं पृथ
धूपविलयनं ॥ पंचमान्सा नृन्महाकालाय सृजवलिं ॥ मनु
॥ मां महाकालाय ॥ मनुयहानी धयश्चिमकालायं नृन्महाकालाय

काल

॥ ३ ॥

यका निवेयदिष्टमिहा भनसि नदा नृं मंडरं ख रवाहि मान
नृं नृ वंध नृ दह यन् दिनमकन नृ नृ ॥ ठिक नृ कन पुमि
नृ निं कला गभं क नृ कन यून नृ ॥ विष नाजिकया विलिप्य
वं नृ नीताय यय स्यना म्ना नृ नृ क नृ इह नृ हवं नि निंबकाष्ट
मयं महाकालं कला कर्क कया लाह नृ ॥ उर्दक नृ कया लम क
नृ सर्वानृ नृ धि नृ ॥ गभं नृ कला स्यं इह क नाल वदनं व्यापुच म

महा

॥ १ ॥

म्वनधनं कस्मिंश्चिमासावद्विभननिनाद्यामालीनप्रमासनस्थ
॥ उत्थितं च मत्वा घानांधकाय मूर्तिं कृत्वा सूर्यासाधनमानरुहं ॥
दक्षिणमूर्तिं तु वस्थाय विष्णोः पाद्भ्यां कृत्वा मलं जपेत् ॥ दशमह
सं समय उद्योत बलिंदत्तः गुणध्वयं दद्यात् ॥ नानापूज्यप्रकनर्त
च कृत्वा ॥ ओम् भिमन्तलडि मूलहृक् ॥ कस्मिंश्चिमासावद्विभननिनाद्यामालीनप्रमासनस्थ
धीरुयद्वयनः ॥ दत्ताय नमः ॥ हं ॥ हं ॥ निनाका नं जपेत् ॥ हं ॥ हं ॥

काल

॥ १ ॥

॥ खमलं जपेत् ॥ पूर्ववद्वलिंदद्यात् ॥ ओम् महाकालहन वज्रं तस्माहा
लकमकं जपेत् ॥ ओम् महाकालहाहाहं ॥ नमः वलिंगृहकार्यं कुरु
॥ १ ॥ वज्रनेत्रं ॥ तस्माहा उद्यमार्थं कृत्वा महाकालं साधयदि
मि ॥ नीलांशुजन्मालकर्जुनघनचूयानविर्यार्कवांशुनिःसी
मप्रसवपुमिष्टकिनक्षकालाललाचना ॥ इष्टाकारिकनाल
हासनलसहकुननाल उमम् ॥ श्रीमणीनसनरुनालममहाका

महा

लोहगङ्गागला ॥ सत्तुल्यकनूतमरुथेव मुदिमांकायाइयकान्तरः कर्षीत्क
मपदमनादिनखिलं श्रीमद्गुणानां ह्या ॥ हवीकामवतीमनकस्यगमः पहा
मयां गुणानां ॥ संचिन्त्यसु ॥ रतीलहं कतिमनः सहागवविक्रयत् ॥ रुद्धिं हं गवेरु
मयकिलं कालावर्त्तनी ॥ स्वमं ॥ समरुद्धिं लुद्धिं कालायटलच्छयं ममांतीष
॥ ॥ स्ववर्गर्हमपीदनेष्टविकराक ॥ अनूद्धिं कलेः ॥ सनातनधनास्यपिंजल
वहस्मकायक ॥ स्थलं ॥ विस्तुं धननाचिनंदनमलिव्यासकृपादहयं ॥

काल

九

क्षमार्जयनिमानमहुविलत्ताईलदहच्छुदं॥ अकृतीकनियीकर्मभिरुघनमख
 न्म॥ प्रसादामनमधुलारुवहजिह्वालाग्रनयुक्तं॥ विशाभयनिवस्रवाम
 रुजयादधुंतिभूलंगथ॥ हस्तनामकपालमकपयमउकान्तहाकरुनि॥
 क्षमताइर्दनिवसनननमिभरप्रकृत्तयानामसह॥ विद्यरूपंजकनालंकन
 लवयभप्रकरास्यमियं॥ आचार्यालिहयद्विषनिकूधियावत्तुयदाहि
 ना॥ ऊवा सर्वजनधकधुविसनानीडाऊकानग्रहा॥ नान्द्वैर्कलत्ताकालिष्य

॥ महा ॥

॥ ५ ॥

मि महा उष्टा कृ भन खवन ॥ मुष्मि स्थि यु क जाल यं कल क उ काने ग रान
सन ॥ चिन्दनं पि न के पि व न म हि न सा ध्य स्य न श्रानि च ॥ स्थित्वा तिल
यमान म कल ४ चिन्दन मंगम निच ॥ अम त्वा र्ज व उ मा त्म यं च यि मि क र
म यं च यं चामु क ॥ यृष्णो ध य विल य न न पि महा कालाय द द्या हलिं ॥
अम न वा सि मा र्ग ग न म कृ ता य उ धा यि श्रि मा कालाय य दि त्वं प
मि हा म न सि क दा वु सं ज न्ता य कानि ॥ म म क नाम इ हं र व र व हि

काल ॥

॥ ५ ॥